ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

मैं आत्मा हूबहू मेरे
बाबा जैसी हूँ

"घर मन्दिर लगे, गृहस्थी नहीं, आपके घर से पवित्रता की खुशबू आये"

जैसे सेवाकेन्द्र पर अगर कोई भी जरा स्व-भाव स्व-संस्कार के वश होकर ऐसी चाल-चलन चलते हैं तो सब कहते हो ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसे ही आपके घर के स्थान पर भी ऐसी महसूसता हो कि इस स्थान पर ऐसा कोई कर्म नहीं होना चाहिए। यह फीलिंग दिल में आये कि यह कर्म हम नहीं कर सकते। जैसे सेवा स्थान पर कोई भी कमी पेशी देखते हो तो ठीक कर देते हो ऐसे अपने लौकिक स्थान को और स्थिति को ठीक कर देना। **घर मन्दिर लगे, गृहस्थी नहीं। जैसे मन्दिर का वायुमण्डल सबको आकर्षित करता, ऐसे आपके घर से पवित्रता की खुशबू आये।** जिस प्रकार अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैलती, इसी प्रकार पवित्रता की खुशबू दूर-दूर तक फैलनी चाहिए, इसको कहा जाता है पवित्र प्रवृत्ति। अच्छा"

AvyaktMurli- 17-10-81

माया-मुक्त ब्राह्मण जीवन के लिए

परमात्म इशारे

सबसे बड़े ते बड़ा दान
गुण-दान वा शक्तियों का दान है।
निर्बल को शक्तिवान बनाना ...
यही श्रेष्ठ दान है वा सहयोग है।

(अव्यक्त महावाक्य - 09.01.1993)

Peace of Mind
CH. 1221 d2h
CH. 1087 dishtv
CH. 1065 TATA PLAY
CH. 678 airtel digital TV
CH. 496 SUN DIRECT

Give happiness to everyone
and receive blessings.

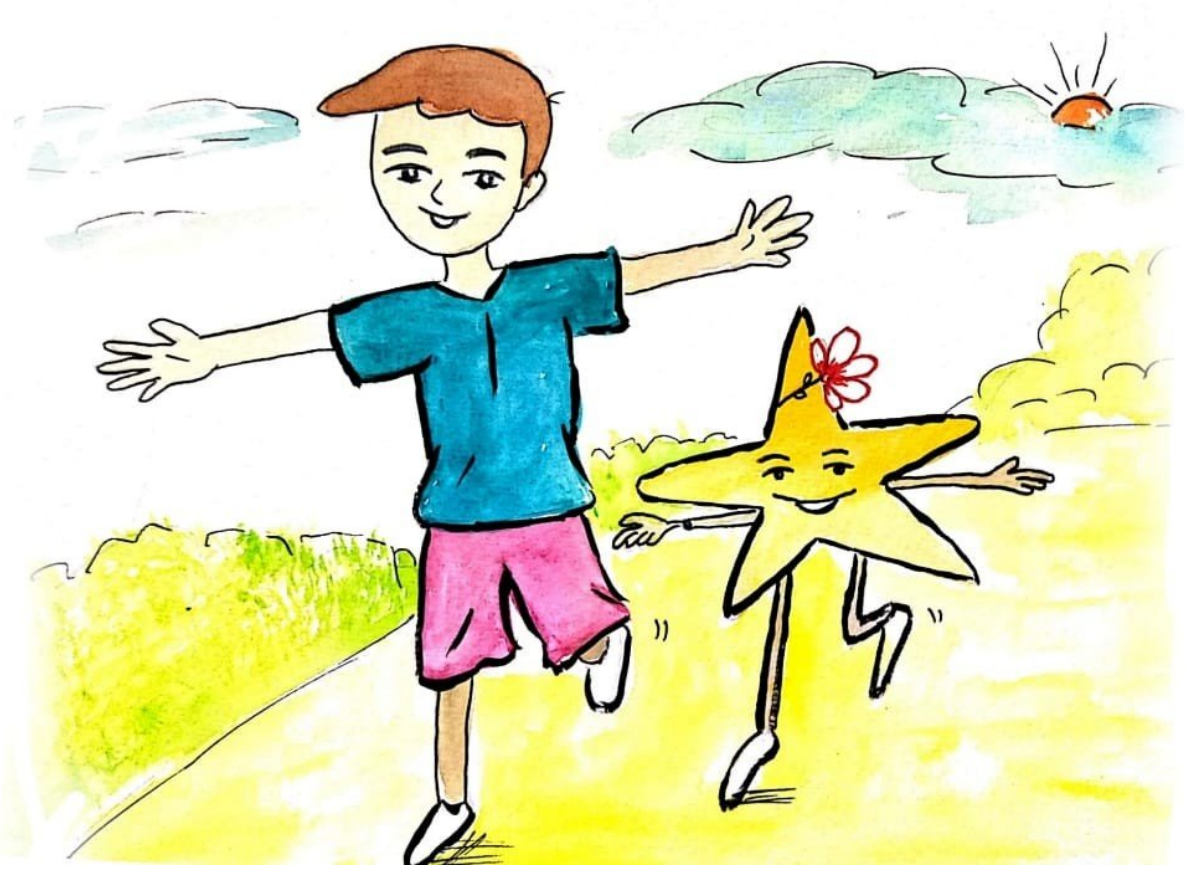

अव्यक्त शिक्षाएँ

बाप समान बनने वाले सदा स्वरूप रहते हैं। याद स्वरूप, सर्वगुण स्वरूप, सर्व शक्तियों स्वरूप। स्वरूप का अर्थ ही है अपना रूप ही वह बन जाये। गुण वा शक्ति अलग नहीं हो। लेकिन रूप में समाये हुए हों। जैसे कमजोर संस्कार वा कोई अवगुण बहुत काल से स्वरूप बन गये हैं, उसको धारण करने की कोई मेहनत नहीं करते हो लेकिन नेचर और नैचुरल हो गये हैं। उनको छोड़ने चाहते हो, महसूस करते हो कि यह नहीं होना_ चाहिए लेकिन समय पर फिर से न चाहते भी वह नेचर वा नैचरल संस्कार अपना कार्य कर लेते हैं। क्योंकि स्वरूप बन गये हैं। ऐसे हर गुण वा हर शक्ति निजी स्वरूप बन जाए। मेरी नेचर और नैचुरल गुण बाप समान बन जाएँ। ऐसा गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप, याद स्वरूप हो जाता है। इसको ही कहा जाता है- 'बाप समान'।

अ.बापदादा-03.01.83

रहमदिल, शुभ भावना, क्षमा के सिन्धु

बापदादा- 24-02-2002

वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में रहमदिल, शुभ भावना और शुभ कामना वाली आत्मा कितने परसेन्ट में रही? बीती को बिन्दी लगाना और रहम के सिन्धु बन जाना। क्षमा के सिन्धु बन जाना।

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

अच्छा।

Everday I give up my complaints and co-operate, I give up my ego and choose humbleness & this is how I plant the seeds of a peaceful world.

BRAHMA KUMARIS

facebook.com/brahmakumaris | youtube.com/brahmakumaris

Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website: www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW www.IshvariyaKhajana.BKhq.org